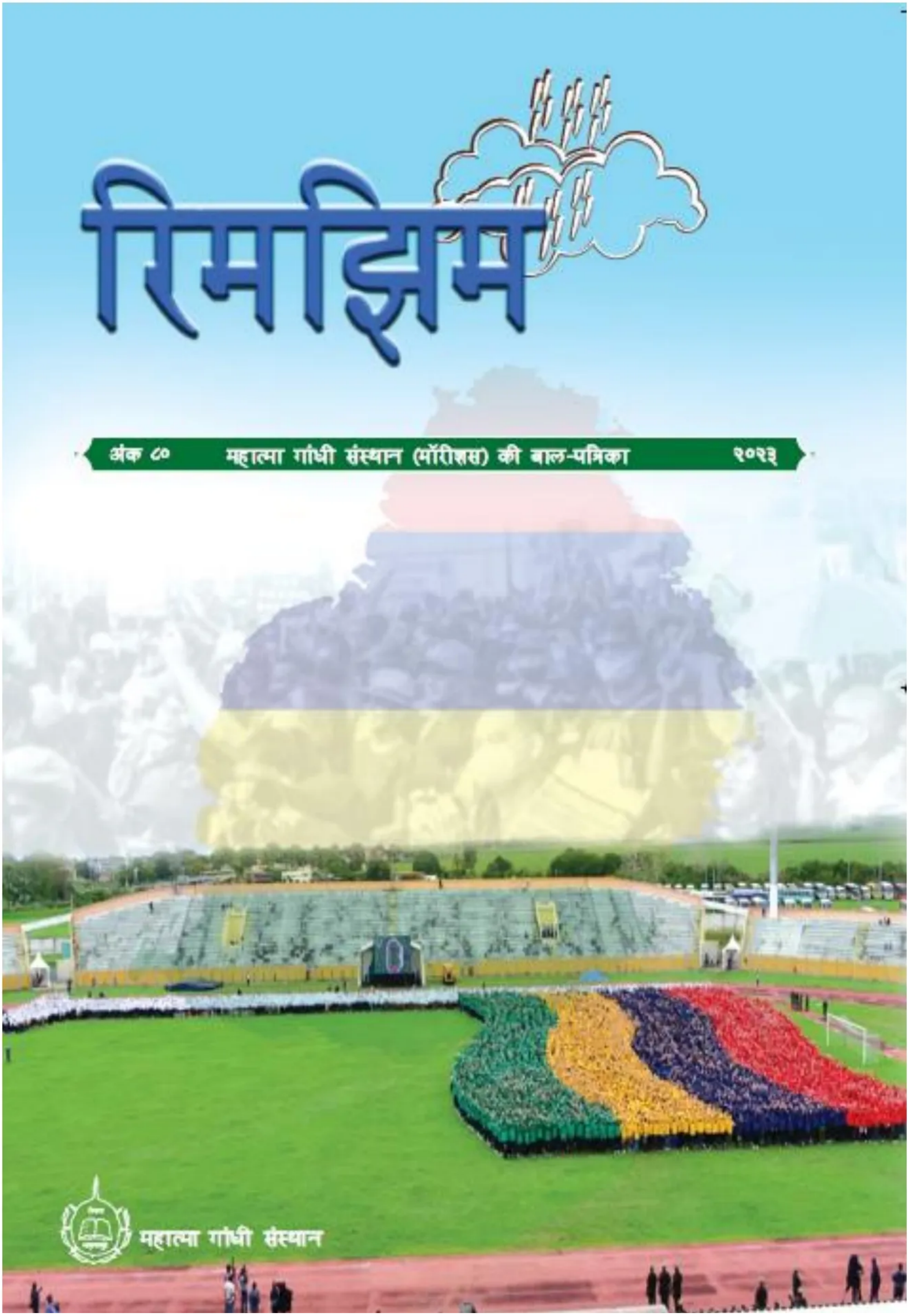
रिमझिम
अंक ८०
महात्मा गांधी संस्थान (मॉरीशस) की बाल-पत्रिका
२०२३
महात्मा गांधी संस्थान

माँ

- अनीता शरद झा

ये छवि नयनों से धूमिल,
एहसासों में जीवंत हो गई माँ।
सबके कष्ट हरने वाली माँ।

हम एहसास माँ के दर्द का,
अपनी खुशी के आगे देख नहीं
पाते।
तभी माँ थी ये कहती,
कद्र दर्द तभी समझ पाओगे ।
जब मै दुनिया में नही रहूँगी।

तभी तो सच कहती है दुनिया,
इंसान और इंसानियत की कद्र,
जाने के बाद होती है।
हम सबको मिलकर रहना,
जीना सिखाती माँ।

आज भी एहसासों में,
है जीवंत माँ।
कष्ट हरने वाली माँ को,
पुकारते है हम 'माँ'॥

रिमझिम
महात्मा गांधी संस्थान (मॉरीशस) : १९९४ से प्रकाशित बाल पत्रिका

मुख्य संपादक
डॉ लक्ष्मी झमन
वरिष्ठ प्राध्यापिका एवं अध्यक्षा
सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग
उपसंपादक
श्रीमती श्रीति रामपल
सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग
टाइप सेटिंग : दिशा बहादुर

संपर्क सूत्र :
डॉ लक्ष्मी झमन
संपादक, वसंत/रिमझिम
सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग
महात्मा गांधी संस्थान, मोका
मॉरीशस
creativewritingdept@gmail.com
Phone : 4032022
Fax : 4332164

पत्रिका शुल्क
वर्ष : २९ अंक ८० प्रति २० रु

रिमझिम में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार तथा दृष्टिकोण लेखकों के हैं, इसके लिए संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

रिमझिम पत्रिका से संबंधित किसी भी तरह के विवाद मॉरीशस न्यायालय के अधीन ही मान्य होंगे।

अनुक्रम

संपादकीय - डॉ. लक्ष्मी झमन - 3

लेख

आज के परिप्रेक्ष्य में कितने प्रासंगिक हैं श्रीराम - गोवर्द्धन यादव - 6

लघुकथा

रामदेव धुरंधर की दो लघुकथाएँ

पिंजरा - 10

खामोश तूफान - 11

नींव को बिसरा कंगूरे की गाओ - सुनील गज्जाणी - 12

कहानी

अनोखा है प्रखर - रोचिका अरुण शर्मा -14

एक परी आसमान से उतरी - सोनाली यादव - 18

कविता

हिन्दी में बाल गीत - 20

गोवर्धन सिंह फ़ौदार "सच्चिदानन्द" की दो कविताएँ

जीवन - 22

जय श्री हनुमान - 22

अपनी माटी का क्या होगा - गोवर्द्धन यादव - 23

सामान्य ज्ञान

महान वैज्ञानिक - मैरी क्यूरी - श्रीति रामपल - 24

गाय - डॉ लक्ष्मी झमन - 25

संस्कृत - श्रीमती कीर्ति देवी रामजतन -27

जोड़-तोड़ शृंखला - राहुल उपाध्याय -29

पहेलियाँ - दिशा बहादुर -30

प्रश्न-पत्र - लोकप्रकाश हीरु -31

संपादकीय

- डॉ लक्ष्मी झमन

शिक्षा का एक उद्देश्य किसी बच्चे का सामाजिक विकास इस प्रकार करना है कि वह सामाजिक प्रगति में सहायक हो सके। दूसरे शब्दों में वह एक सफल सामाजिक प्राणी बन सके। इस दृष्टि से बच्चे में सामाजिक जीवन संबंधी आदान-प्रदान करने की क्षमता होनी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि बच्चा यथासंभव सभी सामाजिक कार्यों में सम्मिलित हो और सहयोगपूर्वक कार्य कर सके। बच्चे अध्यापक की सहायता से शिक्षा प्राप्त करते हैं परंतु उनके प्रथम गुरु उनके माता-पिता होते हैं। इसलिए माता-पिता को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि उनके बच्चे उनसे क्या चाहते हैं।

दुनिया में शायद ही ऐसे माता-पिता हैं जो अपने बच्चों का भविष्य न चाहते हों तथा उनके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर न रहते हों। प्रत्येक माता-पिता अपनी संतानों को हर प्रकार की सुविधा और सुख देना चाहते हैं परंतु माता-पिता को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि अधिक सुविधाओं की प्राप्ति से तथा लाड़-प्यार से बच्चे बिगड़ न जाएँ। प्यार के कारण माँ-बाप बच्चों को जो मन में आए करने देते हैं पर जब हाथी के दाँत बाहर निकल आते हैं तब उन्हें चिंता होती है। माँ-बाप की ढिलाई के कारण बच्चों में अनुशासनहीनता पैदा हो सकती है।

बच्चे का मानसिक स्वास्थ्य भावों की स्वस्थ अभिव्यक्ति पर बहुत कुछ निर्भर होता है। यदि भावों की अभिव्यक्ति के अवसर नहीं मिलते अथवा भावों का दमन किया जाता है तब उसके मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। जिस बच्चे को स्नेह, मित्रता, सहानुभूति आदि को व्यक्त करने के अवसर नहीं मिलते उसका जीवन अपूर्ण होता है। खेल द्वारा बच्चे अपने भावों की स्वस्थ अभिव्यक्ति पर्याप्त मात्रा में कर लेते हैं। बच्चे अधिकतर अपने मन से कार्य करना चाहते हैं। यदि माँ-बाप उन्हें अपने मन से कार्य करने नहीं देते और उन्हें बार-बार आदेश दिया जाता है तो उनकी रुचि कार्यों में घट जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि यथासंभव बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार कार्य करने देना चाहिए। बच्चों में प्रकृति और प्राकृतिक वातावरण से प्यार करने की आदत भी डालनी चाहिए ताकि उनमें सादगी आए।

कुछ माता-पिता बच्चों को सदा काम में लगाए रखना पसंद करते हैं। परंतु देखा जाए तो मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह हानिकारक है। बच्चों को ऐसा कुछ समय मिलना चाहिए जहाँ वे इच्छानुसार कार्य करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो। शिक्षालय का पर्यावरण बच्चों

के मानसिक विकास में सहायक होता है। इसलिए कहा जाता है कि घर के सीमित पर्यावरण से बाहर आकर बच्चे अपने मानसिक विकास के लिए विद्यालयों में अनेक अवसर प्राप्त करते हैं। इसीलिए बच्चों का पाठशाला जाना अनिवार्य है।

बहुत से माँ-बाप बच्चों द्वारा घर के सारे काम-काज करवाते हैं जिससे उनके अध्ययन की एकाग्रता में विघ्न पड़ता है। इस निष्ठुर व्यवहार से बच्चों के हृदय को गहरी ठेस लगती है। बच्चों को बिना बाधा के उभरने दें तो उनका स्वाभाविक रूप देखने को मिलता है। अगर माँ-बाप चाहते हैं कि उनके बच्चे न्याय और दया का पाठ सीखें तो माँ-बाप को भी न्यायप्रिय और दयालु होना चाहिए। बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करना चाहिए जिनमें उनकी ऐसी समस्याओं को हल करने का अभ्यास हो जो सूझ-बूझ और साहस की मांग करता है। यह भी देखा गया है कि बच्चे पर्याप्त प्रश्न करते हैं परंतु कभी-कभी ये प्रश्न माता-पिता को अच्छे नहीं लगते। परिणामस्वरूप वे बच्चों को डाँट देते हैं। समझदार माता-पिता बच्चों के प्रश्नों के उत्तर स्वयं देते हैं तथा बच्चों को भी स्वयं उत्तर जानने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। बच्चों में हर समय कुछ न कुछ करने का स्वभाव बालसुलभ है और उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए। प्रत्येक बच्चे में ज्ञान प्राप्त करने की और विकसित होने की सहज वृति होती है, परंतु सबसे महत्त्वपूर्ण गुण उत्साह है। इसी उत्साह से पता चलता है कि बच्चे उच्च से उच्च स्तर तक पहुँचने के लिए कितनी लगन से काम कर सकते हैं।

समाज में बहुत सारे बच्चे उत्कृष्ट प्रतिभा के होते हैं। जहाँ तक हो सके माता-पिता को अपने बच्चों में यह भावना उत्पन्न नहीं करना चाहिए कि वे मानसिक विकास की दृष्टि से अत्यंत उच्च कोटि के हैं अन्यथा ये बच्चे अहंकार से भर जाते हैं। यह देखा गया है कि जो बच्चे अपनी मानसिक क्षमता पर अत्यधिक गर्व करते हैं, धीरे-धीरे उनके स्वस्थ विकास में बाधाएँ उत्पन्न होने लगती हैं। मानसिक विकास की दृष्टि से सबसे आवश्यक बात यह है कि बच्चे जैसे हों उन्हें उसी रूप में स्वीकार किया जाए। उनसे उनकी मानसिक क्षमता के अनुरूप ही कार्यों की आशा की जाएँ। कभी-कभी बच्चे दुर्बल होते हैं जिसका अर्थ यह है कि उनसे सामान्य बुद्धि के बच्चों के मानसिक कार्यों की अपेक्षा करना अनुचित है। बहुत से माता-पिता इस बात को भूल जाते हैं और वे अपने बच्चों पर गलत दबाव डालते हैं जिसके फलस्वरूप बच्चों के मानसिक विकास में रुकावट पैदा होती है।

मानव कल्याण में रत विश्व के अनेक संगठनों एवं यू. एन. ओ. के विश्व कल्याण संगठनों के सत्प्रयासों एवं प्रेरणाओं से सन् 1979 अंतरराष्ट्रीय बाल वर्ष के रूप में मनाया गया। यह उल्लेखनीय है कि अंतरराष्ट्रीय बाल वर्ष 1979 के अवसर पर भारत के डॉ. हरीकृष्ण देवसरे

के सम्पादन में 'बाल साहित्य : रचना और समीक्षा' नामक समालोचनात्मक ग्रंथ का प्रकाशन हुआ था जिसमें बाल साहित्य के विविध पक्षों पर विचार व्यक्त किए गए हैं।
1979 से 2 वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने घोषणा-पत्र में बालकों के मौलिक अधिकारों की घोषणा की थी। इसमें प्रमुख अधिकार इस प्रकार हैं – स्नेह, प्रेम और सद्भावना पाने का, पर्याप्त पोषण का, डॉक्टरी देखभाल, नि:शुल्क शिक्षा का, खेल और मनोरंजन का, समाज के उपयोगी सदस्य बनने का, व्यक्तिगत क्षमताओं के विकास आदि का परंतु विश्व के बहुसंख्यक बच्चों के लिए ये अधिकार आज भी कल्पना की चीज़ बने हुए हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि समाज के उस वर्ग को जगाया जाए जो अपने बच्चों को उनके मौलिक अधिकारों से वंचित रखता है। बच्चों के कुछ मौलिक अधिकार होते हैं और अगर कोई माता-पिता वे मौलिक अधिकार अपने बच्चों को नहीं दे सकते तो वे अपने बच्चों के साथ अन्याय करते हैं। एक सच यह भी है कि बहुत से बच्चे शारीरिक विकृतियों के साथ जन्म लेते हैं किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाए। समाज में शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के पालन-पोषण में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। माता-पिता को विकलांग बच्चों पर विशेष ध्यान देना चाहिए । हमारे देश में सभी विकलांग बच्चों को कृत्रिम अंग तथा शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए आर्थिक सहायता और छात्र-वृत्ति सुलभ करने की भी व्यवस्था है। बाल अपराधियों के सुधार एवं पुनर्वास पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

बच्चों के व्यक्तित्व के विकास पर माता-पिता के स्नेह का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है । जिन बच्चों को अपने माता-पिता अथवा परिवारवालों का पर्याप्त स्नेह नहीं मिलता वे कालांतर में असामाजिक व्यवहार करने लगते हैं । परिणाम यह होता है कि वे बुराइयों की राह पर चल पड़ते हैं । बड़ों का कर्त्तव्य होता है कि वे बच्चों को निराशा से बचाएँ और उन्हें सफलता के शिखर तक पहुँचने के लिए अग्रसर करें । प्यारे बच्चो! आप भी जीवन में हर संभव प्रयास करें ताकि हर मोड़ पर सफलता आपके कदम चूमे ।

> *सफलता के लिए कोई जादुई छड़ी नहीं होती । वास्तविक दुनिया में सफलता सिर्फ काम करनेवालों को मिलती है । बिना कड़ी मेहनत के सफलता नहीं मिलती । ईश्वर चिड़ियों को खाना तो ज़रूर देता है, परंतु उनके घोंसले में नहीं डालता । उन्हें अपना खाना पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। एक छोटी सफलता पाने के लिए भी मेहनत करनी पड़ती है और वह बड़ी-बड़ी बातें करने से कहीं बेहतर है ।*

लेख

आज के परिप्रेक्ष्य में कितने प्रासंगिक हैं श्रीराम

- **गोवर्द्धन यादव**

आज सारे जगत के लिए सौभाग्य का दिन है क्योंकि अखिल विश्वपति सच्चिदानन्दघन श्रीराम इसी दिन रावण जैसे दुर्धान्त रावण के अत्याचार से पीड़ित पृथ्वी को सुखी करने के लिए और सनातन धर्म की स्थापना के लिए मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में इस धरा पर अवतरित हुए थे। श्रीराम केवल हिन्दुओं के ही "राम" नही हैं, बल्कि वे अखिल विश्व के प्राणाराम हैं। सारे ब्रह्माण्ड में चराचर रूप से नित्य रमण करने वाले, सर्वव्यापी श्रीराम किसी एक देश या व्यक्ति के कैसे हो सकते हैं ? वे तो सबके हैं, सबमें हैं, सबके साथ सदा संयुक्त हैं और सर्वमय हैं। कोई भी जीव उनके उत्तम चरित्र का गान करता है, श्रवण करता है, अनुसरण करता है, निश्चय ही पवित्र होकर परम सुख की प्राप्ति करता है।

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीराम के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा कि उन्हें राज्याभिषेक की बात सुनकर न तो प्रसन्नता होती है और न ही वनवास की सूचना पर वे दुःख का अनुभव करते हैं। माँ कौशल्या श्री रामजी से कहती हैं -

"तात जाउँ बलि वेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू
पितु समीप तब जाएहु भैया। भै बडि बार जाइ बलि मैया।

हे पुत्र ! शीघ्र ही स्नान करके जो भी इच्छा हो कुछ मिष्ठान्न खालो। पीछे पिताजी के पास जाना, बड़ी देर हो गई है। यहाँ माता कौशल्या को पता ही नहीं चल पाया कि विमाता कैकेई ने उन्हें वन भिजवाने का पक्का प्रबंध कर रखा है। श्रीराम इस बात को जान चुके थे। प्रसन्नवदन श्रीराम माँ से कहते हैं -

पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड काजू ।।

धर्म की धुरी श्री रघुनाथजी ने धर्म की दशा को जाना और माता से अत्यन्त ही मृदु शब्दों में कहा कि पिताजी ने मुझे वन का राज्य दिया है, जहाँ मेरा सब प्रकार से कार्य सिद्ध होगा। फ़िर कहते हैं -

आयसु देहि मुदित मान माता, जेहिं मुद मंगल कानन जाता
जनि सनेह बस डपसि भोरें। आनन्दु अंब अनुग्रह तोरे।

हे माता ! प्रसन्न मन से आज्ञा दीजिए जो वन जाते हुए मुझे हर्ष और मंगलकारी हों, स्नेह के वश भूलकर भी न डरना। हे माता ! आपके आशीर्वाद से मुझे सब प्रकार का सुख मिलेगा।

महर्षि वाल्मीकि ने इस प्रसंग को बड़ी ही कुशलता से लिखा कि पिता की दशा देखकर श्रीराम दुःखी हो जाते हैं।वे माता कैकेई से विनम्रतापूर्वक उसका कारण जानना चाहते हैं। तब वे कहती हैं -

"तत्र मे याचितो राजा भरतस्याभिषेचनम, गमनं दण्डकारण्ये तव चाद्दैव राघव।

(सर्ग १८/३३)

राघव ! मैंने महाराज से यह याचना की है कि भरत का राज्याभिषेक हो और आज ही तुम्हें दण्डकारण्य भेज दिया जाए -

"तदप्रियममित्रन्घो वचनं मरणोपमम*श्रुत्वा न विव्यथे रामः कैकेई चेदमब्रवीत (सर्ग १९/१)

"एवमस्तु गमिष्यामि वनं वस्तुमहं त्वितः*जटाचीर राज्ञः प्रतिज्ञामनुपालयन *(सर्ग १९/२)*

"वह अप्रिय तथा मृत्यु के समान कष्टदायक वचन सुनकर भी शत्रुसूदन श्री राम व्यथित नहीं हुए। उन्होंने कैकेई से कहा – "माँ ! बहुत अच्छा ! ऐसा ही हो। मैं महाराज की प्रतिज्ञा का पालन करने के लिए जटा और चीर धारण करके वन में रहने के निमित्त अवश्य यहाँ से चला जाऊँगा।" श्रीरामजी का पूरा जीवन संघर्ष व झंझावतों से घिरा रहा फ़िर भी वे सन्मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए। उनके सद्गुण और निर्णय आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासंगिक हैं, जिनसे हमें शिक्षा लेने की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से आज चारों ओर मानवीय मूल्यों का तेज़ी से विघटन हो रहा है। पारिवारिक मूल्यों की स्थिति यह है कि नई पीढ़ी अपने माता-पिता, जिन्होंने उसे जन्म ही नहीं दिया, बल्कि लालन-पालन कर शिक्षा प्रदान की और स्वावलंबी भी बनाया, वे उन्हें घर के कोने तक ही सीमित कर देती है या वृद्धाश्रमों में, अनाथालयों में पहुँचा देती है। हमारे यहाँ 'मातृ देवो भव, पितृदेवो भव' तो बड़े शान के साथ कहा जाता है। लेकिन आज कौन पिता को देवता और माता को देवी मान रहा है? भाइयों और अन्य संबंधियों में अलगाव, जलन, घृणा और विद्वेष के भाव ही सब जगह लक्षित हो रहे हैं। दरअसल यहीं पर श्रीराम का चरित्र प्रासंगिक हो जाता है। मर्यादित पुरुषोत्तम श्रीरामजी ने सामाजिक मूल्यों का निर्वहन आजीवन निभाया। वे वास्तव में माता-पिता को देवतुल्य मानते थे। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है -

प्रातःकाल उठि के रघुनाथा। गुरु पितुमातु नवावहिं माथा।

वे अपने अनुजों से भी प्रगाढ़ प्रेम करते थे। उनके सभी भाई उन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय थे। तुलसीदासजी लिखते हैं -

"अनुज सखा संग भोजन करहीं, मातु पिता अग्या अनुसरहीं
"बेद पुरान सुनहिं मन लाई, आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई।
"आयसु मागि करहिं काजा, देखि चरित हरषै मन राजा। *(बालकांड-२०४/२)*

लक्ष्मणजी के प्रति उनका स्नेह कुछ ज्यादा ही था। वाल्मीकि लिखते हैं -

> लक्ष्मणो लक्ष्मसम्पन्नो बाहिःप्राण इवापर, न च तेन विना निद्रां लभते
> पुरुषोत्तमः मुष्टमन्नमुपानीतमश्राति न हि तं विना *(बालकाण्ड ३०)*

पुरुषोत्तम राम को लक्ष्मण के बिना नींद नहीं आती थी। यदि उनके पास उत्तम भोजन लाया जाता तो वे उसमें से लक्ष्मण को दिए बिना नहीं खाते थे।

यह सर्वविदित ही है कि पिता के आदेश मात्र पर उन्होंने राजसिंहासन को त्याग करने का निर्णय ले लिया था। जब राज्याभिषेक की बात चली तो उन्होंने सोचा कि उनके रघुकुल में बड़े राजकुमार को ही राजा बनाने की रीति दोषपूर्ण है। जब भरत को राजा बनाने की बात माँ कैकेई ने की तो वे बड़े प्रसन्न हुए थे। मेघनाथ के शक्ति प्रहार से मूर्छित लक्ष्मण को देखकर वे फ़बक कर रो पड़े और रोते-रोते उन्होंने यहाँ तक कह दिया था कि यदि वे ऐसा जानते कि वन में भाई को खोना पड़ेगा, तो वे अपने पिता की आज्ञा मानने से भी इनकार कर देते। आज स्थिति सर्वथा प्रतिकूल है। भाई, भाई का दुश्मन है। संयुक्त परिवार खंड-खंड हो रहे हैं। आज समाज में मानवता का पतन, परिवारों में विघटन और आपसी बैर का बोलबाला है। परिवार में अशांति का ज़हर घुल रहा है। लोभ-स्वार्थ-नफ़रत-केवल और केवल धन कमाने की लिप्सा ने आदमी को जकड़ रखा है। पास-पड़ोस के लोग कभी परिवार की तरह रहा करते थे, आज भागमभाग की ज़िंदगी में कौन पड़ोस में रह रहा है? यह तक जानने की फ़ुर्सत नहीं है। इस संदर्भ में श्रीराम द्वारा प्रस्तुत उदाहरण अनुकरणीय है। उनके लिए छूत-अछूत, धनी-दरिद्र, ऊँच-नीच के बीच कोई भेदभाव नहीं था। हमारे देश के कर्णधार दलित, अतिदलित, अनुसूचित जनजातियों, वनवासियों के कल्याण के लिए केवल विकास का ढिंढोरा पीटते हैं और उनके बीच वैमनस्यता के बीज बो रहे हैं। शबरी के जूठे बेरों को प्रेम से खाना, केवट निषादराज को गले लगाना, वानर, भालू, रीछ जैसी जनजातियों को प्यार-स्नेह देकर उन्हें अपना बनाना और उनके जीवन में उत्साह का संचरण करना, कोई राम से सीखे। रामराज्य में किसी को अकारण दण्डित नहीं किया जाता था और न ही लोगों के बीच पक्षपात व भेदभाव था। क्या आज की नई पीढ़ी श्रीराम की इस सदाशयता से कोई शिक्षा ग्रहण करेगी ?

श्रीराम के समान आदर्श पुरुष, आदर्श धर्मात्मा, आदर्श नरपति, आदर्श मित्र, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श शिष्य, आदर्श पति, आदर्श स्वामी, आदर्श सेवक, आदर्श वीर, आदर्श दयालु, आदर्श शरणागत-वत्सल, आदर्श तपस्वी, आदर्श सत्यव्रती, आदर्श दृढ़प्रतिज्ञ तथा आदर्श संयमी और कौन हुआ है? जगत के इतिहास में श्रीराम की तुलना में एक श्रीराम ही हैं।

साक्षात परमपुरुष परमात्मा होने पर भी श्रीराम ने जीवों को सत्पथ पर आरूढ़ कराने के लिए ही आदर्श लीलाएँ कीं, जिनका अनुसरण सभी लोग सुखपूर्वक कर सकते हैं।

आज हमारे श्रीरामजी का पुण्य जन्मदिवस चैत्र शुक्ल नवमी है। इस शुभ अवसर पर सभी लोगों को खासकर उनको,जो श्रीरामजी को साक्षात भगवान और अपना आदर्श मानते हैं,श्रीराम-जन्म का पुण्योत्सव बड़ी धूमधाम से मनाना चाहिए। श्रीराम को प्रसन्न करना और उनके आदर्श गुणों को अपने जीवन में उतारकर श्रीराम-कृपा प्राप्त करने का अधिकारी बनना चाहिए।

- 103,कावेरी नगर,छिन्दवाड़ा, भारत

****

मॉरीशस ने बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स

- श्रीति रामपल

24 जनवरी 2023 को अंजले स्टेडियम, बेल व्यू हरेल, मापु में मॉरीशस ने लहराते हुए राष्ट्रीय ध्वज का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया | गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा निर्धारित सख्त निर्देशों को पूरा करने के बाद देश ने कुल 6,145 प्रतिभागियों के साथ यह नया रिकॉर्ड बनाया। इनमें से अधिकतर प्रतिभागी लगभग 170 माध्यमिक विद्यालयों के छात्र थे। पिछला रिकॉर्ड भारत द्वारा अगस्त 2022 में कुल 5,885 प्रतिभागियों के साथ बनाया गया था।

एक बयान में, प्रधान मंत्री, श्री प्रवीन कुमार जगनाथ ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि देश ने लहराते ध्वज की सबसे बड़ी मानव छवि के गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड को तोड़ने के लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया है। उन्होंने सभी युवा प्रतिभागियों के योगदान की सराहना की और इस बात पर ज़ोर दिया कि इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में नवजवानों की भागीदारी उनके अनुशासन की मज़बूत भावना के साथ-साथ मॉरीशस के लिए उनके प्यार, भक्ति और देशभक्ति को प्रदर्शित करती है।

इस आयोजन ने स्वतंत्रता की 55वीं वर्षगांठ और मॉरीशस गणराज्य की 31वीं वर्षगांठ के जश्न की शुरुआत को चिह्नित किया।

रामदेव धुरंधर की दो लघुकथाएँ

पिंजरा

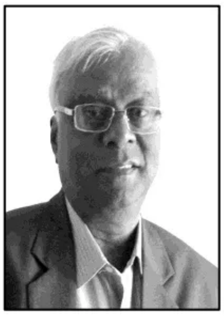

उनकी शादी के तीन दिन हुए थे कि बाज़ार जाने पर उन्हें एक तोता प्यारा लगने से खरीद लिया था। पिंजरा साधारण दाम से ले कर महंगे दाम तक के होने से उन्होंने अपने पैसे के हिसाब से एक पिंजरा खरीदा था। पिंजरा जैसा भी था उनके लिए अपने तोते की तरह अनमोल था। बेचने वाले ने तोते को ज्योंही पिंजरे में डाला था वह प्यार से गला झुला कर आवाज़ करते हुए झूमने लगा था। ज़ाहिर था बेचने वाले ने अपने काम को ध्यान में रखने से उसे इस तरह मानो कुशल कलाकार बनाया था। पर दोनों का ध्यान व्यापार के गणित में नहीं जाता। उनके लिए तोता मानो जन्मजात कलाकार था।

दोनों नौकरीशुदा थे और अभी शादी की उनकी छुट्टी चल रही थी। अपने पास बहुत सारा वक्त होने से वे तोते पर खूब ध्यान देते थे। दोनों ने तोते को खरीदते वक्त उसे खुश देखा था। उनकी अपनी भावना और सोच से यही उनके लिए अपने प्यारे तोते का जीवन था। वे कहते थे चलें हम तोते के जीवन को अपना जीवन बना लें। तोते को दिखा कर वे हाथ पर हाथ रखे चुंबन का आनन्द लेते थे। उनका मानना था यह अपने प्रेम का प्रतिदान है जिसमें अपना प्यारा तोता शामिल है। तोता भी खूब था। उनका यह प्रेम देख कर पिंजरे में गला नचाने लगता था। तोते के हाव - भाव मानो कहते हों कि प्रेम करते हो तो मेरी तरह नाच कर तो बताओ। यह बात थी तो दोनों नाच कर तोते को बताते थे। तोता अब तो जैसे नाच के और ताव में आ जाता था। दोनों नाच से थक गए हों तो मानो तोता कहता हो आराम करो और मेरे नाच का आनन्द लो।

एक सुबह जागने पर उनका खून जैसे सर्द हो गया। तोता पिंजरा तोड़ कर भाग गया था। दोनों निराशा की स्थिति में अब तो जैसे अपने प्रेम से ही रिक्त हो गए। पर ऐसी बात नहीं थी। वे अपने प्रेम से रिक्त नहीं हुए। उनका प्रेम यहीं था। उन्हें तो तोते के प्रेम के बारे में सोचना पड़ रहा था। आज अपने तोते के प्रति उनकी संवेदना में आ रहा था तोता उनके प्रेम का मोहताज नहीं था। वह भी तो एक जीव था। उसका प्रेम कहीं और था !

खामोश तूफान

मृत्यु उससे टकरायी। मृत्यु थी तो जैसे जीवन का एक ऐसा बिंदु था जिस में न कोई रोक थी, न टोक थी। जन्म के लिए तैयारी हो सकती है, मृत्यु के लिए नहीं। लंबे जीवन में मृत्यु इस तरह क्षणांश हो कि प्रश्न न कर सकें मेरा बांध टूट रहा है तो निर्माण के मेरे अपने कल पुर्जे कहाँ? पर सच में अब निर्माण ही कहाँ, अपने अंत को ही पूज लें।

मृत्यु की प्रक्रिया में उसकी भी तो हालत यही थी कि वह स्वयं से भी प्रश्न न कर सके मेरे अपने लोग कहाँ? यश अपयश का तो कोई बंधन ही नहीं। क्या कभी किसी ने उसे बिना कमीज़ के रास्ते पर चलते देखा? पर आज उसे स्नान करवाते वक्त भरे - पूरे लोगों के बीच भूमि पर लिटाया गया है बिना किसी कपड़े के। जाने के लिए किसी धर्म पुस्तक से उसके लिए कहा गया है सांसारिकता से छूटने के लिए उसे इसी तरह निर्वस्त्र होना है। घेर कर खड़े हुए लोगों में अपनी बहुएँ होंगी तो ज्यादा से ज्यादा मुँह फेर सकती हैं।

जब तक थोड़ा होश था उसने इतना ही जाना मृत्यु तो वाकई उससे टकरायी। अब निस्पंदता में उसका विलयन शुरू हो रहा था। फिर से होश में तो आता नहीं कि लोगों से कह सकता उसने किस साँचे में मृत्यु का अनुभव किया। पर उसने मृत्यु के बारे में जितना सुना था ज़रूर वह सब पीछे छूट रहा था और मृत्यु से एकमात्र उसकी अपनी अनुभूति जुड़ती चली जा रही थी। उसकी अपनी अनुभूति से मृत्यु न ऊष्मा थी और न शीतलता थी। न शाम थी, न सुबह थी। न रोग, न चिंता थी। बिना किसी रंग के, बिना किसी चांद के, बिना किसी सूरज के। बिना किसी धरती के, बिना किसी आकाश के, बिना किसी प्यास के, बिना किसी भूख के, बिना किसी सच के, बिना किसी झूठ के, बिना किसी शत्रुता के, बिना किसी प्रेम के।

वह तो हवा के बिना एक चिंघाड़ता तूफान था जिससे टकराने पर उसने जाना था वही तो अपनी मृत्यु है !

संसार में यदि कुछ करना है तो परिश्रम करो, प्रयास पर प्रयास करो। एक बार असफल हो जाते हो तो हिम्मत मत हारो, फिर कोशिश कभी व्यर्थ नहीं जाएगी। निराशा को पीछे छोड़ो और आशा की ओर पकड़ो। आशा ही जीवन का प्रतीक है, और आशा ही जीवन है, वहीं मंज़िल है। उस आशा को जीवित रखने के लिए आपको भरपूर परिश्रम करना पड़ेगा। बच्चो, संसार में जितने ही मनुष्य हैं, सबके विचार एक दूसरे से नहीं मिलते।

नींव को बिसरा कंगूरे की गाओ

- सुनील गज्जाणी

"पहले बंद करो अपने ये हाय-हाय,मुर्दाबाद के नारे, अगर तुम सब कुछ शांति रखो तो मैं कुछ बोलूँ, व्यक्ति गुस्से में झल्लाया !

"लो हो गए हम चुप, अब फरमाइए !" महिला ने अपने हुजूम को शांत रहने का इशारा कर जवाब में पूछा !

"अरे, मैं समझ सकता हूँ आप सब के आक्रोश को ! मगर मैं क्या करूँ , मैं तो बस अपना कर्त्तव्य निभा रहा हूँ यहाँ का कर्मचारी होने के नाते ! अच्छा, एक बात बताओ तुम्हारे इन मटकों के यहाँ फोड़ने से क्या तुम्हारे गाँव के सूखे पड़े हौद, कुओं में पानी भर जाएगा ? या अंदर जो खेल मैदान में मैच की तैयारी के लिए पिछले कुछ दिनों से लगातार पानी का जो छिड़काव हो रहा है क्या उसे मैदान प्रशासन या ज़िला प्रशासन बंद कर देगा ? जो मुझे नहीं लगता !"

'अगर वे हमारे पानी की समस्या को हल्के में लेंगे तो हमारा विरोध हमारा आक्रोश भी बंद नहीं होगा, समझ लीजिए "!

"तेवर अच्छे हैं !"

"नहीं ये पीड़ा है ! सुनिए साहब, हम औरतों को ही पता है पानी की एक-एक बूँद का महत्व ! इस आग उगलती गर्मी में हम कस्तूरी मृग-सी हो जाती है जब हमारे आस-पास के जल-स्त्रोत सूखने लग जाते हैं !"

"बहन जी,मैं समझ सकता हूँ आप की मनोदशा को !"

"साहब,समझने और भोगने में बहुत अंतर होता है ! जो रोज़ हम भोग रही हैं ! हम अपने सिर पर पानी का घड़ा ले कोसों-कोस पैदल चल कर लाती हैं, अगर आप समझते तो पानी की यहाँ यूँ बर्बादी भी नहीं करने देते !"

'अरे,यहाँ की बात फिलहाल अलग है शायद तुम्हें पता नहीं होगा कि इस प्रकार के मैचों से हमारे शहर का और अधिक विकास होगा, उन्नति होगी !"

"विकास ! अरे, जहाँ आज भी इस भीषण गर्मी में पानी के अभाव में लोग तड़प-तड़प कर प्यासे मर जाते हैं ,जहाँ पानी के लिए आज भी भीख माँगनी पड़ती है,ऐसा विकास ? ! पहले भीख माँगने की परम्परा तो मिटाइए !"

"बहन जी, आप की बात शत-प्रतिशत सही है ! मगर मेरे सामने ये बातें करने से क्या होगा ! देखिए, दो बात आप कहेंगी, फिर मैं कहूँगा, फिर ये बहस तक़रार में बदल जाएगी ! मैं आप

के दर्द को अच्छी तरह समझता हूँ इसलिए इतनी सहायता तो कर सकता हूँ कि अगर आप सब चाहो तो आप के लिए ज़रूरतमंद पानी ले जाने की अनुमति यहाँ से दे सकता हूँ !"
"अरे ओ साब जी ,हम यहाँ अपना विरोध जताने आये हैं, हमें भीख नहीं हक चाहिए ! और हाँ, हमें पानी का रिश्वत देकर और भ्रष्टाचार फैलाने की कोशिश मत कीजिए !"तैश में आकर उसने ज़वाब दिया !
"अरे, मेरा मतलब ये नहीं था ,आप ग़लत मतलब निकाल रही है !"अधिकारी सकपकाया-सा बोला !
"माफ़ कीजिए साब , अपने आक्रोश में मैंने ज़्यादा ही कह दिया आप को ! क्या करें , हमारी समस्या एक-दो दिन से नहीं, हमेशा से रही है ! मेरी समझ में तो हमारा विकास तभी होगा जब हमें पानी की समस्या से जूझने की विरासत अपनी अगली पीढ़ी को नहीं सौंपनी पड़े !"
"ओह , इतनी समस्या है तुम्हारे गाँव में पानी की ?"

"मेरे गाँव की स्थिति यूँ बयां कर सकती हूँ क़ि बिवाइयां-सी पड़े सूखे खेतों में बहती लू मानो उनका दर्द और बढ़ाती रहती है ! बूढ़े कुएँ तो यूँ लगे मानो अपनी उम्र जी चुके हों !
"उफ़! बहुत दुखद.... !" ऐसा कह संवेदना व्यक्त कर ही रहा होता है कि तभी अधिकारी का मोबाइल घनघनाता है !
"हाँ , ठेकेदार जी ! अरे आज दो नहीं तीन टेंकर और जल्दी भेजो मैं मैदान को शानदार घास युक्त बनाने के लिए किसी भी प्रकार से पानी की कंजूसी नहीं चाहता ! सख्त लहज़े में मोबाइल पर बोला !
"अभी जो आप ने संवेदना व्यक्त की फिर वह क्या थी ?!" ये सुन उस औरत ने हैरत में सवाल किया !

"देखिए इतने बड़े होने वाले क्रिकेट मैच में अगर मैदान के प्रबंधन में कुछ भी कमी मिली तो मेरा प्रमोशन तो दूर की बात शाबाशी तक नहीं मिलेगी और संवेदनाओं से कभी ड्यूटी नहीं की जाती !"

कहानी

अनोखा है प्रखर

- रोचिका अरुण शर्मा

प्रखर के पिताजी का तबादला हुआ था। अब उसके लिए शहर और मोहल्ला नया था। उसकी माँ उसे नहला-धुला कर रोज़ सवेरे बाहर चौक में व्हील चेयर पर बैठा देतीं। उसके पिताजी भी छुट्टी के दिन वहीं उसके पास बैठ कर अखबार या अन्य कोई पुस्तक पढ़ते। अखबार के साथ रविवारीय पत्रिका आती जिसमें से बाल कहानी एवं कविताएँ पढ़ कर उसके पिताजी अक्सर उसे सुनाया करते।

प्रखर की समस्या यह थी कि वह चल-फिर और बोल नहीं सकता था। हाँ, उसका दिमाग बहुत तेज़ काम करता था । लेकिन उसकी शारीरिक कमी के चलते उसे विद्यालय में दाखिला नहीं मिल पाया।

उसके आस-पास में रह रहे बच्चे उसे बड़ी अजीब सी नज़रों से देखते। महीने बीते और गर्मियाँ आ गयीं। प्रखर की माँ उसे शाम के समय पास के पार्क में लेकर चली जातीं। वहाँ एक सेवानिवृत अध्यापक श्री नरोत्तमदास जी भी अक्सर सैर के लिए आया करते। उन्होंने प्रखर को देखा तो उस से बात करने की कोशिश करने लगे।

"तुम्हारा क्या नाम है बेटे ?"

"पप......" वह बस इतना ही बोल पाया।

उसके हाथों और पैरों में भी संतुलन नहीं था।

जब भी नरोत्तमदास उससे बात करने की कोशिश करते वहाँ खेल रहे बच्चे अक्सर कहते "अंकल यह गूंगा है, बोल नहीं सकता"

"अंकल यह चल-फिर भी नहीं सकता"

लेकिन नरोत्तमदास जी जब प्रखर से बात करते तो वह प्रसन्न हो जाता और कुछ न कुछ बोलने की कोशिश करते हुए मुस्कुराने लगता।

ऐसे समय में आस-पास खेल रहे बच्चे बड़े कौतूहल से उसे देखते और उसका मज़ाक बनाते हुए उसकी नक़ल करते “पप्पप .....” उसके हँसने के तरीके की भी नक़ल करते “खी ...खी ....खी।”

नरोत्तमदास जी को यह सब बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

“देखो बच्चो यह बहुत ही अशोभनीय बात है कि तुम प्रखर का मज़ाक बनाते हो।” एक दिन नरोत्तमदास जी ने रूखे स्वर में उन सब बच्चों को फटकार लगाई।

बच्चे डर के मारे वहाँ से भाग गए लेकिन एक दिन फिर ऐसा ही हुआ। नरोत्तमदास जी प्रखर से बातचीत कर रहे थे और उसे हिंदी भाषा का ज्ञान दे रहे थे। बच्चे वहाँ आकर खड़े हो गए। उन्होंने प्रखर के नाम का मज़ाक बनाते हुए कहा “नाम प्रखर पर है डफर।”

आज तो नरोत्तमदास जी गुस्से में आग बबूला हो उठे। वे उसी समय प्रखर को व्हील चेयर में बैठा कर उन बच्चों में से ऋषभ के घर जा धमके।

जब घर की घंटी बजी तो ऋषभ के पिताजी ने दरवाज़ा खोला।

“आइए – आइए मास्टर साहब” उन्होंने नरोत्तमदास जी का स्वागत किया और सोफे पर बैठने का आग्रह किया।

“कहिए कैसे आना हुआ ?” ऋषभ के पिताजी ने उन्हें चाय का कप हाथ में थमाते हुए पूछा।

“जी क्या बताऊँ ? आपका बेटा ऋषभ बहुत ही शैतान है। इस दिव्यांग बच्चे का मज़ाक बनाने में उसे न जाने क्या मज़ा आता है। मैं ने उसे कई बार समझाया भी लेकिन यह अपने दोस्तों के पूरे समूह के साथ पार्क में आता है और इस बच्चे का सब मिलकर उपहास उड़ाते हैं।”

ओहो , मुझे तो यह बात मालूम ही नहीं ? अच्छा हुआ आपने मुझे अवगत करवाया मास्टर जी। देखिए आप तो शिक्षक हैं, अपने कार्यकाल में बहुत से विद्यार्थी देखे होंगे। यदि अभी आपके सामने मैं उसे समझाऊँगा तो उचित नहीं। लेकिन आप फ़िक्र न करें मैं आपके जाने के बाद उसे ज़रूर समझाऊँगा।”

मास्टर जी ऋषभ के पिताजी का शुक्रिया अदा कर वहाँ से लौट आए थे।

लेकिन ऋषभ के पिताजी को अपने बेटे के व्यवहार के बारे में जान कर बहुत बुरा लगा। उन्होंने ऋषभ की माँ को बुलाया "देखो ऋषभ की माँ मास्टर जी ऋषभ की शिकायत लेकर आए थे। हमें मिलकर ऋषभ को समझाना चाहिए।"

"जी आप ठीक कहते हैं, मुझे भी रसोई में मास्टर जी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। लेकिन ऋषभ अभी नासमझ है, हम समझायेंगे तो ज़रूर समझ जाएगा।"

"बेटे ऋषभ।"

"जी माँ" ऋषभ कमरे में दाखिल हुआ।

बेटे तुम प्रखर को चिढ़ाते हो क्या ?

अब ऋषभ अपना मुँह लटका कर खड़ा हो गया था।

"बेटे ईश्वर ने उसे शारीरिक रूप से असक्षम बनाया है लेकिन हमें कोई हक नहीं कि हम उसके शरीर या बौद्धिक स्तर का मज़ाक बनाएँ। तुम्हारी कक्षा में जितने भी विद्यार्थी हैं क्या सभी प्रथम आते हैं ?"

"जी नहीं" ऋषभ ने दबे स्वर में कहा।

"बेटे, क्योंकि ईश्वर ने सभी को अलग-अलग क्षमताएँ दी हैं। सब एक से हों ऐसा संभव नहीं।

इसी प्रकार प्रखर सभी से अलग है।"

"बेटे यह बहुत ही बुरी बात है कि तुम अपने दोस्तों के साथ मिल कर उसका मज़ाक बनाया करते हो। क्या आनंद आता है इसमें तुम्हें ?"

ऋषभ अपने किए पर बहुत शर्मिन्दा था इसलिए चुप्पी लगा कर गर्दन नीचे किए हुए सुनता रहा।

उसकी माँ उसकी मनःस्थिति समझ गयी थी इसलिए उसे डांटना उचित न समझा। "देखो बेटे जो हुआ सो हुआ लेकिन आइन्दा से ऐसा नहीं होना चाहिए।"

"जी माँ मैं ख़याल रखूँगा" ऋषभ ने अपने किए की माफी माँगी।

"और तुम्हारे दोस्तों को भी समझाना कि किसी की शारीरिक क्षमता का उपहास उड़ाना उचित नहीं।" पिताजी ने अपनी बात साथ में जोड़ी।

"जी समझ गया पिताजी, मैं उन्हें भी समझा दूँगा।"

अगले दिन जब शाम को ऋषभ पार्क में गया, उसके दोस्त प्रखर की व्हील चेयर देखते ही उधर बढ़ने लगे।

"आज से हम प्रखर का मज़ाक नहीं बनाएँगे।" ऋषभ ने अपने दोस्तों से विस्तार में बात की।

सभी दोस्तों ने उसकी बात समझते हुए तय किया और कहा "हमें अपने किए पर दुःख है।"

"और शर्मिन्दगी भी" ऋषभ बोला।

सभी मिलकर नरोत्तमदास जी के पास गए। उन्हें देखते ही नरोत्तमदास जी मुस्कुराए "आओ बच्चो आओ, देखो प्रखर की हिंदी का पराक्रम।"

मास्टर जी ने प्रखर द्वारा लिखी छोटी-छोटी चार पंक्तियों की कविताएँ पढ़कर सुनाईं। पापा, मम्मी ....फूल ....तितली पर बहुत ही सुन्दर भाव व्यक्त किए थे प्रखर ने। मास्टर जी ने उसके द्वारा अभिव्यक्त किए भाव उसकी डायरी में लिख दिए थे। करीब बीस कविताएँ उस डायरी में बंद थीं जो प्रखर के मन की आवाज़ थी।

मास्टर जी बोले "जब प्रखर पचास कविताएँ लिख लेगा तो मैं इसका काव्य संग्रह तैयार करवाऊँगा। हमारी सरकार पांडुलिपि प्रकाशन की बहुत सी योजनाओं की विज्ञप्ति निकालती रहती है।"

सभी प्रखर के मन के भाव पढ़ कर आश्चर्यचकित थे। तभी ऋषभ बोला "हम सोचते थे प्रखर बोल नहीं सकता लेकिन इन कविताओं के माध्यम से प्रखर बोल उठा"

"हाँ , प्रखर बोल उठा" सभी बच्चे एक साथ बोले।

ऋषभ ने प्रखर का एक हाथ ऊँचा उठा दिया था "अनोखा है प्रखर" सभी बच्चे एक साथ उछले।

प्रखर उन सभी के साथ मुस्कुरा रहा था। मास्टर जी ने अपने मोबाइल से उनकी यह तस्वीर खींच ली थी।

- **चेन्नई**

एक परी आसमान से उतरी

- सोनाली यादव

सभी बच्चे झूम-झूमकर हाथ में हाथ डाले गाना गाने लगे - " देखो-देखो परी आयी। ढेर सारे तोहफ़े लेकर आयी गुड्डे-गुड्डियों से भरी रेलगाड़ी लेकर आयी देखो परी आयी, परी आयी।" नन्हीं परी ने सभी को उपहार में खिलौने दिए। फ़िर सभी के साथ तरह-तरह के खेल खेले। खेल खेलते पता ही नहीं चल पाया कि शाम होने को है। जैसे ही नन्हीं परी ने अंधेरे को घिरते देखा तो अपने मित्रों से विदा लेते हुए कहा कि वह कल फ़िर आएगी। इतना कहते हुए उसने अपने पंखों को फड़फड़ाया और आसमान में उड़ चली। अब नन्हीं परी रोज़ धरती पर आती और अपने मित्रों के साथ दिन भर खेलती और शाम होने के पहले अपने घर लौट जाती।

एक दिन की बात है। जब सब मित्र लुका-छिपी का खेल खेल रहे थे, नन्हीं परी इस समय एक वृक्ष के पीछे छिपी हुई थी ,तभी एक जादूगर आया और उसने अपने जादू के बल पर उसे कैद कर लिया और वहाँ से चलता बना। यह बात देर तक किसी से छिपी न रह सकी कि नन्हीं परी का अपहरण कर लिया गया है। काफ़ी खोजने के बाद भी बच्चे अपनी नन्हीं मित्र को खोज न सके तो उन्होंने पास के पुलिस-स्टेशन पर जाकर रपट लिखवाने की सोची।

सब बच्चे पास ही के पुलिस-स्टेशन जा पहुँचे। उन्होंने अपनी टूटी-फूटी ज़बान में अपनी व्यथा-कथा कह सुनाई, लेकिन जब थानेदार ने उसका नाम बतलाने को कहा, तो सभी ने चुप्पी साध ली थी, क्योंकि वे परी का असली नाम पूछना तो भूल ही गए थे। वे उसे केवल परी ने नाम से जानते थे, थानेदार ने जब उसका हुलिया जानना चाहा तो गोलू ने बतलाया कि एक नन्हीं सी परी, परीलोक से रोज़ आती है और हमारे साथ खेलती है और शाम होने से पहले रवाना हो जाती है। थानेदार को सहसा विश्वास नहीं हुआ कि ऐसा भी हो सकता है। उसने अब बारी-बारी से बच्चों से जानना चाहा। सभी का जवाब एकसा था। खैर जैसे-तैसे उसने रिपोर्ट दर्ज़ की और बच्चों से कहा कि वह अपने आदमियों को चारों तरफ़ उस परी की तलाश करने को कहेगा और जैसे ही वह उन्हें मिल जाएगी, सूचना दे दी जाएगी। अब आप सब लोग अपने-अपने घर जाओ।

बच्चे परी के अचानक गुम हो जाने से परेशान तो थे,लेकिन कर भी क्या सकते थे। उधर परी जब अपने घर नहीं पहुँची तो उसके माता-पिता भी परेशान हो रहे थे। उसकी खोज में दोनों धरती पर आए। इस समय बच्चे घर जाने के लिए उद्दत हुए ही थे कि वे बच्चों के सामने प्रकट होकर अपनी बेटी के बारे में जानना चाहा कि उनकी बेटी कहाँ है? गोलू ने भावविह्वल होते हुए बतलाया कि अचानक वह न जाने कहाँ गायब हो गई है। लगता है कि किसी बदमाश ने उसका

अपहरण कर लिया है। काफ़ी खोज-खबर के बाद भी वह हमें मिल नहीं रही है। उसने यह भी बतलाया कि हमने उसकी रिपोर्ट थाने में भी दर्ज़ करवा दी है।

परी राजा ने बच्चों से कहा कि वे और ज्यादा परेशान न हो। वे तत्काल ही उसे ढूँढ निकालेंगे। इतना कहकर उन्होंने अपनी आँखें बंद करते हुए अपनी जादुई छड़ी को चारों तरफ़ घुमाते हुए कुछ मंत्र पढ़े। मंत्र के पढ़ते ही नन्हीं परी और जादूगर सामने खड़े थे। जादूगर के हाथों में हथकड़ी पड़ी हुई थी। उसने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा कि अब वह भविष्य में बच्चों का अपहरण नहीं करेगा, उसे माफ़ कर दिया जाए।

राजा ने उसे सख्त हिदायत देते हुए माफ़ कर दिया। जादूगर के कब्ज़े से आज़ाद होते ही नन्हीं परी अपने माता-पिता के पास दौड़ी चली आयी और उनसे लिपट गई। सभी बच्चे अपनी दोस्त को पुनः अपने बीच पाकर खुशियाँ मनाने लगे। नन्हीं परी अपने माता-पिता के साथ आसमान में उड़ चली। सभी बच्चे हाथ हिला-हिलाकर उसका अभिवादन कर रहे थे।

▪ छिंदवाड़ा

अंदर की खुशी जगाओ

- डॉ वेदिका मति हरदोयाल

हिन्दू मुस्लिम बौद्ध ईसाई रहे अपने स्थान
इंसान जो पूजे इंसान को वही महान
देश तो बनते हैं भले इंसानों से,
अमन, सुख, चैन, शांति मिलते हैं इंसानियत से
इंसान बस बने धरती का भगवान
माटी नदी नाले झरने पहाड़ खिल खिलाए एक समान
इंसान दिखाए इंसानियत घर-घर
कण-कण खुशियाँ मुस्कुराएँगीं हर पहरा ।
पड़ोसियों की खुशी में छुपी रहती है खुशी
पड़ोसी देश हो और भी होती है खुशी ।
अपने ही अंदर की खुशी को जगाओ
तो खिलखिलाते पाओगे सारे संसार को ।

- वरिष्ठ व्याख्याता, इंडोलोजीकल विभाग,
महात्मा गांधी संस्थान

हिन्दी में बाल गीत

पूर्वप्राथमिक कक्षा के बच्चों के सर्वांगीण विकास में उनके कौशलों का विकास एक महत्वपूर्ण अंग है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 12-13 अप्रैल 2023 को विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा पूर्वप्राथमिक स्तर के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु एक कार्यशाला रखी गई थी जो बालगीतों के गायन पर आधारित थी। उन बालगीतों को यहाँ दिया जा रहा है। रिमझिम के माध्यम से सभी बच्चे इन गीतों का आनंद उठा सकते हैं।

बिल्ली

बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ
चुहिया रानी घर में आऊँ
देखो लाई हूँ मैं दाना
तुम सब कहकर मौज उड़ाना
गाकर लॉरी तुम्हें सुनाऊँ
चुहिया बोली ना-ना, ना-ना
मेरी बिल में तुम मत आना।।

चिड़िया

चिड़िया बोली हुआ सवेरा
भाग चल अब छोड़ अंधेरा।
छाई पूर्व दिशा में लाली
फैल गई नभ में उजियाली
चटक-चटककर कलियाँ फूटीं
फूलों पर मधुमक्खी झूली।
वह देखो आया खरगोश
लंबे कान और छोटी दुम
मटक-मटककर चलते तुम
तुम्हारी नकल करेंगे हम
हम क्यों रहे किसी से कम।।

नन्हा सा एक बादल

- **श्री प्रकाश मनु**

एक दिन नन्हा-सा एक बादल
आया मेरी छत पर,
बादल था वह चाँदी जैसा सुंदर, बेहद सुंदर।
आकर बोला बादल मुझसे
मेरे दोस्त बनोगे,मैं तो हूँ सैलानी पक्का
मेरे साथ चलोगे?
मैं बोला, हाँ, चलो-चलो जी
मैं भी साथ चलूँगा,
साथ निभाओगे तो मैं भी
सच्चा दोस्त बनूँगा।

मैं तो सो रही थी

मैं तो सो रही थी
मुझे मुर्गों ने जगाया
बोला कुकड़ू कूँ कूँ कूँ
मैं तो सो रही थी
मुझे बिल्ली ने जगाया
बोली म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ
मैं तो सो रही थी
मुझे मोटर ने जगाया
बोली पों पों पों
मैं तो सो रही थी
मुझे अम्मा ने जगाया
बोली उठ उठ उठ।।

नदी का गीत

- श्री कौशल पाण्डेय

नदियाँ बहती जाती हैं
गीत खुशी के गाती हैं
पथ में कभी न रुकना भैया
मंत्र सुनाती जाती हैं।
कंकड़, पत्थर, मिट्टी, बालू
सबको गले लगाती हैं।
तट पर इनके जो भी आए
सबकी प्यास बुझाती हैं।

गुड़िया

गुड़िया मेरी रानी है
बन्नो बड़ी सयानी है
ताथई नाच दिखाती है
हँसती रहती है दिन-रात
करती है मीठी बात
ठुमक-ठुमक कर जाती है
कंधे पर चढ़ जाती है

प्रेरणा

- श्रीमती कविता ठाकुर

फूलों को महकते देखा
चिड़िया को चहकते देखा।
चंदा को चमकते देखा
सूरज को दमकते देखा।
झरना बहता, बहतीं नदियाँ
लहलहाती रहतीं खेतियाँ।
देते प्रेरणा हमको सारे
करुणा में है जीवन प्यारे।

कबूतर

जब हम कहते आ-आ-आ
सभी कबूतर दौड़े आते
फुट-फुट फुट-फुट दाना खाते
खाकर वे फुर से उड़ जाते
आ कबूतर आ जाओ
दाना तिनका खा जाओ
उड़ा कबूतर फ़र-फ़र-फ़र-फ़र
बैठा जाकर उस छत पर
बोल रहा है गूटरूगूँ, गूटरूगूँ भाई गूटरूगूँ।

नन्हा दीपक

- डॉ शम्भूनाथ तिवारी

यह नन्हा-सा दीपक प्यार,
फैलाता जगमग उजियारा।
टीम-टीम चमक रहा है, जैसे,
आसमान में जगमग तारा।
बैठे देहरी पर इठलाता, मिटा रहा

बुलबुल

- डॉ रोहिताश्व अस्थाना

मेरे आँगन आता बुलबुल।
बैठ पेड़ पर गाता बुलबुल।।
खूब ताकता, पूँछ हिलाता।
कलगी मस्त नचाता बुलबुल।।
बैठ पपीते की डाली पर।
मीठे फल खा जाता बुलबुल।।
घर का अँधियारा।

साभार : विश्व हिन्दी सचिवालय

गोवर्धन सिंह फ़ौदार "सच्चिदानन्द" की दो कविताएँ

जीवन

कोशिश की यह दुनिया है, इज़हार कभी इंकार है
मिलते हैं कुछ अपने यहाँ, मिलती कभी दीवार है।

सरल सरस है जीवन अपना, चलना कभी न थकना
हँसते खेलते कट जाएँगे यूँही, शेष के दिन चार हैं।

सुख-दुख अपने हाथ हैं, चलना इसके साथ है
निर्णय पर निर्भर होगा, होगी जीत या हार है।

जिह्वा पर कुछ संयम रखना, दूर निंदा से स्तुति करना
फूले फलेगा हर पल तेरा, इतना तो अधिकार है।

चिंता इसकी उसकी छोड़, सीधी कर तू अपनी मोड़
जितना जो भी फल आएगा, करना स्वीकार है।

तन मानव है अतुल्य प्रसाद, ईश्वर का है आशीर्वाद
पाया है न व्यर्थ खो देना अमूल्य यह उपहार है।

कम ज्यादा की बात नहीं कर, पाया जितना बोया
सबकी अपनी भूमिका है, "सच्चिदानन्द" तू किरदार है।

जय श्री हनुमान

अनन्त अनादि भक्त, प्राकट्य दिवस शुभ
सकल जहान प्रिय , हनु गुण गाइए।

ह्र्दय श्रीराम बसे, राघव भजन भजे
भुवन पधारे आए, आरती सजाइए।

कीर्तन भजन कर, चालीसा रटन कर
मंगल दीपक जला, जगत जगाइए।

अंजनी पवन गृह, ढोलक नगाड़े बजे
बरसे आशीष नभ, भक्ति भाव ध्याइए।

अपनी माटी का क्या होगा

- गोवर्द्धन यादव

धरती पर पलने वाला
धरती पर गलने वाला
मानव कुछ सोच रहा
बैठ गरुरी के झोंकों पर
अपनी माटी को भूल रहा
खबर नहीं है उसको
अपनेपन की,जनधन की

ओ-आसमां पर,
सम्पाति सा ऊँचा उड़नेवालों
गर तुमने सोचा होता,
अपने कोमल पंखों का क्या होगा ?
हर गली-गली चौराहों पर
पाखंडियों के अड्डे हैं
तन - मन नीलाम हो रहा
चांदी के चंद सिक्कों पर
अब स्टेजों तक शेष रही
अब आम सभाओं तक शेष रही
मानव से मानवता की चर्चाएं

ओ मानवता के भक्षक बनने वालों
गर तुमने सोचा होता,
गांधी के सपनों का क्या होगा?
हाट बाट में बिकने वाली राम प्रतिमाएं
हमने तुमने लाख खरीदीं होगी
कंठी माला लेकर हमने तुमने
लाख दुआएं बांटी होगी
केवल शब्दों ही शब्दों में
हमने जी भर राम रमाया
न बदली काया, ब बदली माया

ओ दानव से मानव बनने वालों
गर तुमने सोचा होता,
राम की मर्यादा का क्या होगा?

हर सुबह हर शाम
केवल चिंताओं का घेरा है
कब किसको बरबाद करे
कब किसको आबाद करे
और केवल ,बस केवल ,
अपनी ही
प्रभुता का बखान करे
और दानवता का माटी में दंभ भरे

रे, अपनी माटी को दम्भ दिखाने वालों
गर तुमने सोचा होता,
अपनी इस माटी का क्या होगा?

महान वैज्ञानिक - मैरी क्यूरी

- श्रीति रामपल

मैरी क्यूरी को फिजिक्स और केमिस्ट्री दोनों में नोबल पुरस्कार मिला है। विज्ञान की दो शाखाओं में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने वाली वह पहली वैज्ञानिक है।

मैरी क्यूरी का जन्म पोलैंड के वारसा नगर में हुआ था। महिला होने के कारण तत्कालीन वारसॉ में उन्हें सीमित शिक्षा की ही अनुमति थी। इसलिए उन्हें छुप-छुपाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करनी पड़ी। बाद में बड़ी बहन की आर्थिक सहायता की बदौलत वह भौतिकी और गणित की पढ़ाई के लिए पेरिस आईं उन्होंने फ्रांस में डॉक्टरेट पूरा करने वाली पहली महिला होने का गौरव पाया। उन्हें पेरिस विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर बनने वाली पहली महिला होने का गौरव भी मिला। यहीं उनकी मुलाक़ात पिअर क्यूरी से हुई जो उनके पति बने। इस वैज्ञानिक दंपत्ति ने 1898 में पोलोनियम की महत्त्वपूर्ण खोज की। कुछ ही महीने बाद उन्होंने रेडियम की खोज भी की। चिकित्सा विज्ञान और रोगों के उपचार में यह एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी खोज साबित हुई।

1903 में मैरी क्यूरी ने पी-एच.डी. पूरी कर ली। इसी वर्ष इस दंपत्ति को रेडियोएक्टिविटी की खोज के लिए भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। 1911 में उन्हें रसायन विज्ञान के क्षेत्र में रेडियम के शुद्धीकरण (आइसोलेशन ऑफ प्योर रेडियम) के लिए रसायनशास्त्र का नोबेल पुरस्कार भी मिला। वैज्ञानिक माँ की बड़ी बेटी आइरीन को 1935 में रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ तो छोटी बेटी ईव को 1965 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार मिला।

66 साल की उम्र में फ्रांस के सांटोरियम में अप्लास्टिक एनीमिया की वजह से 1934 में उनकी मृत्यु हो गयी। मैडम क्यूरी आज भले ही इस संसार में नही हैं किन्तु उनके द्वारा किए गए कार्य तथा समर्पण को विश्व कभी नही भूल सकता।

बिंदुओं को मिलाकर चित्र को पूरा कीजिए।

गाय

- **डॉ लक्ष्मी झमन**

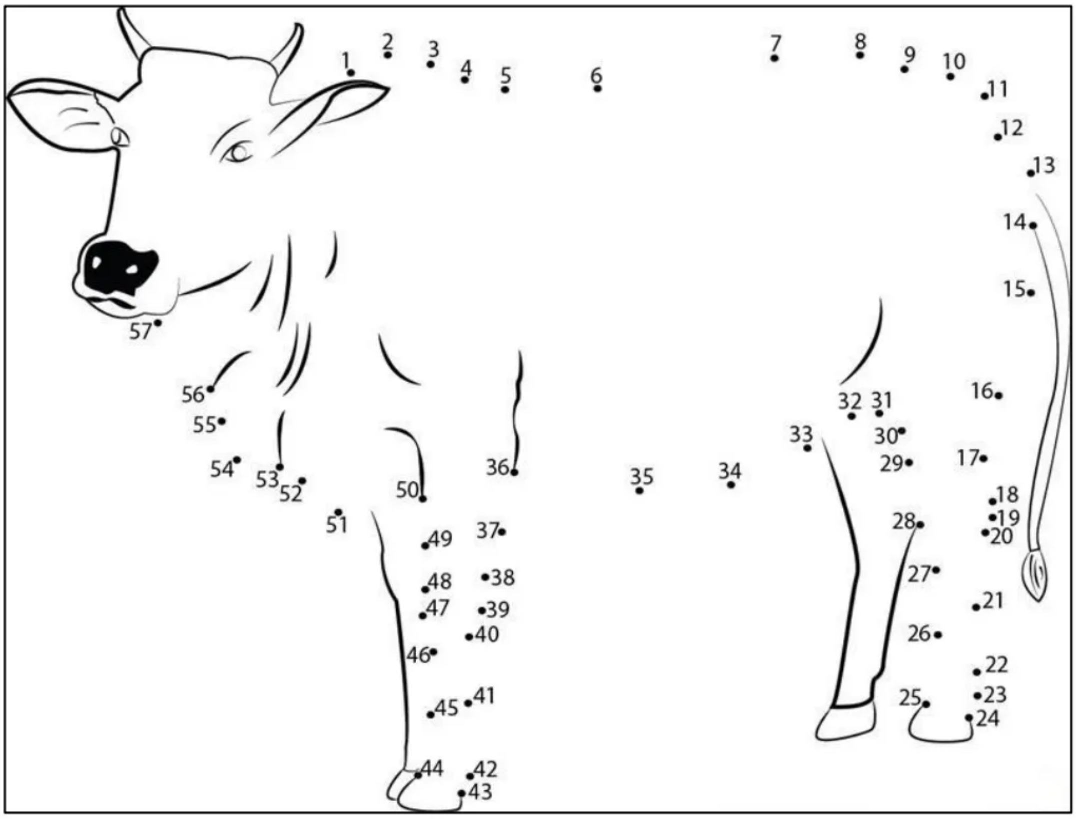

भारतीय संस्कृति में गाय को परम पवित्र जानवर माना जाता है जिसे गौमाता भी कहा जाता है। गाय को देवता और माता के समान मानकर उसकी सेवा-सुश्रुषा करना लोग अपना धर्म समझते हैं। बहुत से धार्मिक कार्यों में गाय की आवश्यकता पड़ती है जहाँ उसकी पूजा करके उससे आशीर्वाद माँगे जाते हैं। गौ माता के समान मानव-जाति का उपकार करने वाली, दीर्घायु और आरोग्यता प्रदान करनेवाली अन्यत्र नहीं। इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है – 'गावो विश्वस्य मातर:' अर्थात् गाय विश्व की माता ही है। यह मान्यता है कि गाय की पवित्र काया में देवताओं का वास है। गाय को चारा देना, नहलाना, पानी पिलाना आदि पुण्यदायक माना जाता है। द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण गोकुल में गायों को चराया करते थे। भारत में आज भी गौओं की अनन्य सेवा की जाती है। वहाँ पर गोहत्या अवैध है। गाय एक चौपाया जानवर है। इसकी पूँछ

लंबी होती है जिसके सिरे पर बाल होते हैं। गाय की आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं जिनमें अपने पालनकर्ता के लिए प्यार छलकता है। पालनकर्ता गौशाला का निर्माण इस प्रकार करता है कि गाय को उसके अंदर हर प्रकार से आराम मिले विशेषकर मूसलाधार बारिश एवं तूफ़ानी मौसम उसे वहाँ किसी प्रकार का कष्ट न हो। वैसे भी पशुओं को कष्ट देना अच्छी बात नहीं है। महात्मा गांधी जी का कहना था कि मानव के हृदय में पशुओं के प्रति दया भाव होने से ही मानवता की पहचान होती है। मॉरीशस में हरियाली के फलस्वरूप गौ माता के पालनकर्ताओं के लिए घास की प्राप्ति सुविधाजनक होती है।

गायें प्रायः सफ़ेद, भूरी, काली या सुनहरी होती हैं। उनमें से कुछ धब्बेदार होती हैं जो एक से अधिक रंग की होती हैं। वे घास, झाड़ियाँ और पत्तियाँ खाती हैं। गाय हमें दूध देती है, जो एक सम्पूर्ण आहार माना जाता है। दूध से हम दही, मक्खन, क्रीम बना सकते हैं एवं घी भी निकाल सकते हैं। पुराने ज़माने में विशेषकर गाँवों में लोग घरों को गाय के गोबर से लीपते-पोतते थे। कहते हैं इससे घर में कीड़े-मकोड़े नहीं आते। गोबर की खाद भी पेड़-पौधों के लिए बहुत अच्छी होती है।

बहुत-सी मिठाइयाँ एवं पकवान बनाने में दूध का प्रयोग किया जाता है। गाय का दूध अत्यंत पवित्र पेय माना जाता है। देवी-देवताओं की पूजा में गाय के दूध को सदैव उपयोग में लाया जाता है। गाय के दूध का सेवन करने से हमारा स्वास्थ्य एकदम ठीक रहता है। बच्चों के लिए गाय का दूध तो अत्यंत ही स्वास्थ्यवर्द्धक सिद्ध होता है। गाय के दूध में इतने पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं कि इसका सेवन करने से मनुष्य हृष्ट-पुष्ट रहता है। गाय का दूध हमें रोगों से भी दूर रखता है।

हमारे देश में इस्कॉन के आश्रमों में कृष्ण के अनन्य भक्तगण गायों की सेवा में अपना सारा समय बीता देते हैं। गौ-सेवा को अपना परम धर्म मानते हुए उसमें अनंत आनंद की प्राप्ति करते हैं।
एक ज़माना था जब मॉरीशस में घर-घर में गाय का पालन-पोषण होता था। उस समय गरीबी का सामना करने के लिए लोग गोपालन के माध्यम से अपने बच्चों की पढ़ाई का खर्च निकाल पाते थे। औद्योगीकरण एवं प्रौद्योगिकीकरण के युग में भी आज बहुत से लोग जीविकोपार्जन हेतु गोपालन में अपना पूरा समय देते हैं। ये लोग गोपालन को गाय की सेवा एवं पुण्य का काम भी समझते हैं। वे एक साथ बड़ी मात्रा में गायों का पालन सुगमता से कर लेते हैं। इस अनमोल सेवा के परिणामस्वरूप ही पूरे देश में विशेषकर गाँवों में दूध उपलब्ध रहता है।

संस्कृत

- **श्रीमती कीर्ति देवी रामजतन**

विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मति: ।
परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम् ।।

(सुभाषित)

शब्द-भंडार

विदेशेषु - विदेशों में
धनं - धन/ संपत्ति/ सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु
विद्या - ज्ञान / knowledge
व्यसनेषु - व्यसनों में / संकटों में
मति: - बुद्धि / विवेक
परलोके - परलोक में
धर्मः - धर्म / लौकिक एवं सामाजिक कर्त्तव्य यथा सत्य बोलना, परोपकार का भाव रखना, अहिंसायुक्त आचरण करना इत्यादि
शीलं - शील / स्वभाव / नैतिक आचरण और व्यवहार / अच्छा चरित्र
वै - निश्चय ही / निश्चित रूप से

अर्थ

परदेश में विद्या ही धन होता है। दु:ख के समय में विवेक धन के समान होता है। परलोक में धर्म ही धन होता है (जबकि) अच्छा चरित्र निश्चय ही (सभी कालों में एवं) सर्वत्र धन-समान होता है।

व्याख्या

जब व्यक्ति विदेश जाता है तो उस समय उसका सबसे बड़ा धन उसका अर्जित किया हुआ ज्ञान होता है जिसके सहारे किसी भी परिस्थिति में वह अपनी व्यवस्था कर ही लेता है। संकट में फँसे हुए व्यक्ति के लिए उसकी विवेक बुद्धि ही सर्वाधिक मूल्यवान होती है जिससे उचित और अनुचित (सही और गलत) के अंतर को पहचान व्यक्ति खुद को बचा लेता है / सुरक्षित कर लेने में समर्थ हो जाता है। परलोक में अर्थात् मृत्यु के उपरांत भौतिक धन का कोई मोल नहीं

रहता अपितु उस अवस्था में धर्म ही धन-तुल्य होता है। सही कर्मों / कर्तव्यों से अर्जित पुण्य ही परलोक में सर्वाधिक मूल्यवान होता है और जो सच्चरित्रता होती है / सत्-आचरण करने का जो भाव होता है / जो अच्छा स्वभाव होता है, वह नि:संदेह प्रत्येक काल और स्थान में धन के समान होता है।

सीख

व्यक्ति चाहे पैसे का धनी हो या न हो, उसे चरित्र का धनी अवश्य होना चाहिए क्योंकि चरित्रहीन धनवान का कोई हृदय से सम्मान नहीं करता जबकि चरित्रवान को सदैव तथा सर्वत्र स्मरण एवं सम्मानित किया जाता है, उनके आदर्शों को अपनाया जाता है, उनके सदाचरणों का अनुकरण किया जाता है। सदाचारी व्यक्ति न केवल इस लोक में सफल होता है अपितु पुण्य अर्जित कर अपनी पारलौकिक अवस्था को भी सार्थक बना लेता है।

✦✦✦✦✦✦✦

समय के आगे

- हर्षवर्धन आर्य

समय के पहिए नहीं होते,
न सटेयरिंग और न भड़भड़ाता इंजन
बस होती है हल्की टिक-टिक
दिल की धरकन जैसी और
समय दौड़ता जाता है
सरपट इसी टिक-टिक को बजाता हुआ
निरंतर भोंपू की तरह
मैं, तुम और यह सारा संसार
भाग रहा है आज इसी टिक-टिक के पीछे
तोड़कर सारे रिश्ते-नाते
छोड़कर संवेदनाओं का दामन
मोड़कर मुँह अतीत से
दौड़कर चले जाना चाहते हैं बस अपना भविष्य
वर्तमान की छाती पर पाँव रखकर।

जोड़-तोड़ श्रृंखला

- राहुल उपाध्याय

क. मेहमान हैं हम पल दो ------------------- । खुश रहें जब तक खुली हैं ------------------- ।	सहमत सह मत	1
ख. पूरी हो अब मेरी ------------------- । खुली लॉटरी और करूँ ------------------- ।	पल के पलकें	2
ग. यदि नहीं तू इससे ------------------- । तो और इसे ------------------- ।	कामना काम ना	3
घ. नाम किशन-कन्हैया ------------------- । जब डराने लगा नाग ------------------- ।	काजल का जल	4
ङ. लक्ष्मण-रेखा नहीं है तुम्हारा ----------------- । कि रुक जाएगा इससे आँखों ------------------- ।	का लिया कालिया	5
च. अब क्या लिखना और क्या ------------------- । जब भी कहा किसी ने ------------------- ।	सुनाना सुना ना	6

'mere-words blogspot'

****

क. 2	**ख.** 3	**ग.** 1	**घ. 5**	**ड़.** 4	**च.** 6

पहेलियाँ

- दिशा बहादुर

मैं अलबेला कारीगर,
काटूं काली घास,
राजा, रंक और सिपाही,
सिर झुकाते मेरे पास।

जीभ नहीं, पर फिर भी बोले,
बिना पाँव सारा जग डोले,
राजा, रंक सभी को भाता,
जब आता तब खुशियाँ लाता ?

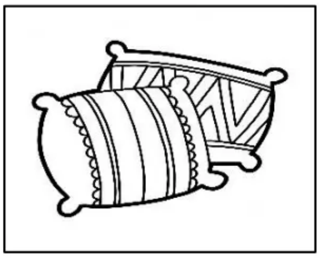

सर के नीचे दबी रहे,
लेकिन चूँ तक न करती है,
बच्चो बोलो कौन है वो,
जो साथ तुम्हारे सोती है ?

दिखने में मैं बॉस सरीखा,
नहीं मैं कडुवा नहीं मैं तीखा,
स्वाद मधुर, स्पर्श रसीला,
गर्मियों तक चले मेरा सिलसिला ?

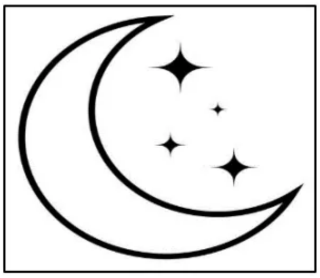

दुनिया भर की करता सैर,
धरती पर ना रखता पैर,
दिन में सोता रात में जगता,
रात अँधेरी मेरे बगैर,
अब बताओ मेरा नाम ?

उत्तर : नाई, रुपया, तकिया, गन्ना, चाँद

प्रश्न-पत्र

Question 1A (5 Marks)

चित्र को पहचानकर उचित शब्द लिखिए : -

एक उदाहरण दिया गया है :

- लोकप्रकाश हीरु

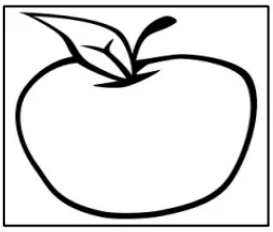

सेब

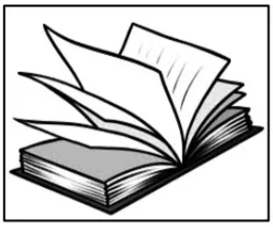

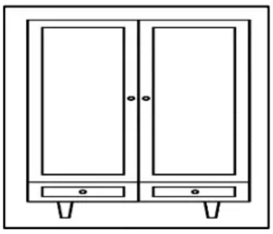

Question 1B (5 Marks)

चित्र को पहचानकर उचित वाक्य से मिलाइए :-

एक उदाहरण दिया गया है:

मंदिर में लोग पूजा करते हैं।

कुत्ता एक पालतू जानवर है।

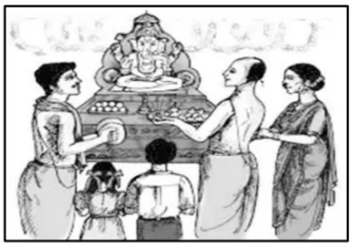

राजू पतंग उड़ाता है।

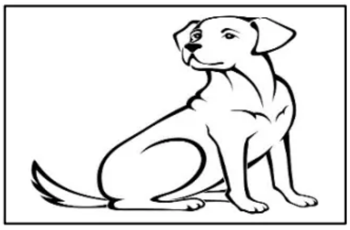

घर के पीछे नारियल का पेड़ है।

जहाज़ समुद्र में है।

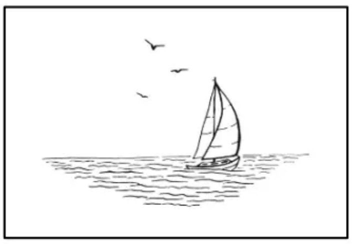

मोती चाचा बाज़ार में सब्ज़ियाँ बेचते हैं।

Question 2A (10 Marks)

सही उत्तरवाले अक्षर को घेरिए :-

उदाहरण : दादीजी के माथे --------- टीका है।

क. में (ख.) पर ग. से घ. को

१. मालिनी -------- लिखाई बहुत सुंदर है।

क. का ख. में ग. पर घ. की

२. चाचाजी ने एक नया मकान ----------------।

क. बनाता ख. बनाती ग. बनाया घ. बनाए

३. अगले रविवार हम सब फूफू के यहाँ शादी में --------------------।

क. जाऊँगा ख. जाएँगे ग. जाते हैं घ. जाना

४. आजकल टीवी पर सुंदर-सुंदर ----------------- दिखाई जाती हैं।

क. फिल्म ख. फिल्मों ग. फिल्में घ. फिल्मी

५. माता-पिता ------------- बच्चों को बहुत प्यार करते हैं।

क. अपने ख. अपना ग. आप घ. अपनी

६. अगले महीने भारत के प्रधान मंत्री जी मॉरीशस --------------------।

क. आना ख. आएँगे ग. आते हैं घ. आते थे

७. राजीव रोज़ अपना गृहकार्य -------------- सोने जाता है।

क. करके ख. करता ग. करती घ. किया

८. वीणा के पति ने एक नई मोटर -----------------।

क. खरीदा ख. खरीदी ग. खरीदे घ. खरीदना

९. गांधी जी कहा करते थे कि क्षमा करना ताकतवर व्यक्ति --------- विशेषता है।

क. का ख. को ग. से घ. की

१०. इस पेड़ ----------- बहुत आम लगे हैं।

क. को ख. पर ग. से घ. का

Question 2B (5 marks)

सही उत्तरवाले अक्षर को घेरिए –

१. मीनू -------- कुर्सी छोटी है।

क. को ख. का ग. की घ. के

२. आज शाम को घर में ----------- आएगा?

क. कौन ख. क्या ग. कब घ. क्यों

३. अपने जन्मदिन के अवसर पर गुरुजी ने सभी को --------- दी।

क. मिठाई ख. केला ग. सेब घ. उपहार

४. दादीजी के बाल ------------- हैं।

क. काला ख. काले ग. काली घ. कालेपन

५. उन्होंने सड़क ----------- एक बूढ़े को देखा।

क. को ख. पर ग. का घ. के

Question 3 (10 marks)

इस पाठ को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

इस जगत में मानव ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। ईश्वर ने मनुष्य के साथ साथ नाना प्रकार के जीव-जन्तु बनाए हैं। हमारी तरह अन्य जीव भी पृथ्वी पर पलते हैं। बहुत से जीव हवा में उड़ते हैं तथा बहुत पानी में तैरते हैं।

मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह समस्त प्राणियों पर दया करें। कुछ लोग जीवों को मारते हैं। यह बड़ा पाप है। अगर कोई जानवर हम पर हमला करे तो उसे मारना पाप नहीं। परंतु बिना कारण हमें किसी भी जानवर को दुख नहीं देना चाहिए। लोग गाय, भैंस, कुत्ते आदि पालते हैं। गाय हमें दूध देती है। दूध पीकर हमारा शरीर बढ़ता है।

कुत्ते हमारे घर की रखवाली करते हैं। चोर-डाकू को पकड़ने में मदद करते हैं। भेड़ से हमें ऊन मिलता है। ऊन से कंबल और कपड़े बनते हैं। इस प्रकार जैसे हम जीवों की देखभाल करते हैं उसी प्रकार बहुत से जीव मनुष्य की सेवा करते हैं।

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिए :-

१. मानव को कैसा प्राणी माना जाता है?

----

२. जीव-जन्तु के प्रति मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है?

----

३. कब किसी जानवर को मारना पाप नहीं?

----

४. कुत्ता किस प्रकार हमारी सेवा करता है?

----

५. ऊन से क्या करते हैं?

----

६. दो पालतू जानवरों के नाम लिखिए।

----

७. दो जंगली जानवरों के नाम लिखिए।

----

८. हमें जानवरों की देखभाल करनी चाहिए क्योंकि --------------------------------------

--।

Question 4A
इस पाठ को ध्यान से पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

एक दफ्तर में सामी नाम का एक ब्रह्मचारी था। वह प्रतिदिन देर से काम पर पहुँचता था। मैनेजर ने कई बार उसे देर से काम पर आते देखा और उसने सामी को दो-तीन बार समझाया परंतु सब बेकार, सामी अपनी आदत से बाज़ नहीं आया।

एक दिन मैनेजर ने उसके देर से आने का कारण पूछा, सामी ने चालाकी से अपनी घड़ी दिखाते हुए कहा, 'साहब, देखिए! मेरी घड़ी में ठीक नौ बजे हैं। मैं हमेशा अपनी घड़ी के समय के अनुसार काम पर आता हूँ। इसमें मेरा दोष बिल्कुल नहीं।'

मैनेजर अपने कमरे में चला गया और अपने इस कर्मचारी को सुधारने का उपाय सोचने लगा। दूसरे दिन भी सदा की भाँति सामी देर से पहुँचा। मैनेजर पुनः उसके पास आया और कहा: 'देखो! आज मैंने एक बात तय कर ली है, या तो तुम अपनी घड़ी बदल लो या मैं अपने दफ्तर का एक कर्मचारी बदल दूँ। इन दोनों में से तुम्हें जो पसंद हो कहो, अरे हाँ! काम शुरू करने से पहले ही निर्णय ले लो।'

यह सुनकर सामी डर गया। उसके पैरों के नीचे की ज़मीन खिसकने लगी। वह चुपचाप अपने काम में जुट गया। उस दिन से किसी ने सामी को देर से आते नहीं देखा।

Question 4a (4 marks)

सही उत्तरवाले अक्षर को घेरिए :

१. कौन रोज़ देर से काम पहुँचता था?

क. मैनेजर ख. सभी लोग ग.सामी घ.कर्मचारी

२. प्रतिदिन के लिए एक दूसरा शब्द ------------ है।

क. रोज़ ख. कभी-कभी ग. हमेशा घ. आज

३. एक दिन मैनेजर ने सामी से क्या पूछा?

क. घड़ी के समय ख. दिन का नाम

ग. देरी से पहुँचने का कारण घ. उनका नाम

४. सामी के अनुसार वह क्यों देर से पहुँचता था?

क. वह अपनी घड़ी के अनुसार काम पर आता था।

ख. वह अन्य के बाद आना पसंद करता था।

ग. वह मैनेजर की बातें सुनना चाहता था।

घ. उसकी एक बुरी आदत थी।

५. अपनी आदत से बाज़ नहीं आया ... का मतलब है

क. वह समझ गया।

ख. वह नाराज़ हुआ।

ग. उसका कोई असर न हुआ।

घ. वह बहुत दुखी हुआ।

Question 4B (5 marks)

इन प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिए :-

१. सामी की क्या बुरी आदत थी?

----

२. मैनेजर ने उसे क्या समझाया?

----

३. मैनेजर को ठगने के लिए सामी ने क्या किया?

----

४. क्या सचमुच सामी की घड़ी खराब थी?

----

५. किस वाक्य से ज्ञात होता है कि मैनेजर सामी को सुधारने में सफल हुआ?

Question 5A (4 marks)

शब्दों को उचित क्रम से रखकर वाक्य लिखिए :

१. दिनों में – पढ़ाई – बरसात – नहीं – है – होती – के – स्कूलों – में

----

२. मेट्रो – में – हैं – बच्चे – करते -सफर - करना – पसंद

Question 5B (6 marks)

वाक्यों को पूरा कीजिए :

१. कल रात को ---।

२. हम हवाई जहाज़ से ---।

३. हमेशा बड़ों का आदर ---।

Question 6 (10 marks)

नीचे दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर खाली जगहों में लिखिए।

प्रतिदिन – शाम – अच्छी – जड़ों – पड़
परंतु – सूखा – हमेशा – फूलों – प्रसन्न

योगीश का परिवार बड़ा धार्मिक है। वहाँ सवेरे------------- पूजा-पाठ होता है। पूजा के लिए -------------- की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए उसके घर के आँगन में ----------------

फूल खिले रहते हैं। योगीश फूल के पौधों की ---------------- देखभाल करता है। यह देखकर पिताजी बहुत ------------------ होते हैं।

गत साल की बात है। देश में भारी --------------- पड़ा। खेती सूख गई। फूलों का भी अभाव ----------- गया। पूजा के लिए फूल नहीं मिलते थे। --------------- योगीश के आँगन में अभी भी पौधों पर एक-दो फूल लगे थे। योगीश की माँ ---------------- सब्ज़ियाँ धोने के बाद पानी पौधों की --------------- में डाल देती थी। पौधे हरे-भरे रहते थे।

Question 7A (5 marks)

रेखांकित शब्दों के शुद्ध रूप को खाली जगहों में लिखिए :

१. -------------- कक्षा में तीस बच्चे हैं। (मैं)
२. इस --------------- में अब पक्षी नहीं है। (घोंसला)
३. मुख्य-अध्यापक ------------------ बुला रहे हैं। (तू)
४. तुम कहाँ से आ रहे ------------ ? (है)
५. रवि ने बताया ------------- उसके यहाँ यह पुस्तक है। (की)

Question 7B (5 marks)

कोष्ठक में दिए गए शब्दों के सही रूप लिखिए :

१. मेरी नानीजी दिवाली पर अनेक ----------------- पकाती है। (मीठा)
२. गीता की -------------------- पर सभी ने उसे बधाई दी। (सफल)
३. हम सभी लोग --------------- यज्ञ में भाग लेते हैं। (सप्ताह)
४. विष्णु एक ---------------- लड़का था। (मेहनत)
५. नारियल का पानी -------------------- है। (स्वाद)

Question 8 (10 marks)

चित्रों के आधार पर दिए गए शब्दों से वाक्य लिखिए।

छुट्टी – सुहाना मौसम

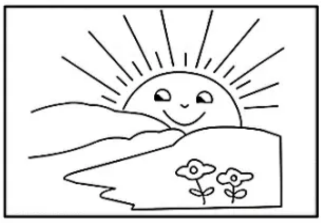

रीता – साइकल

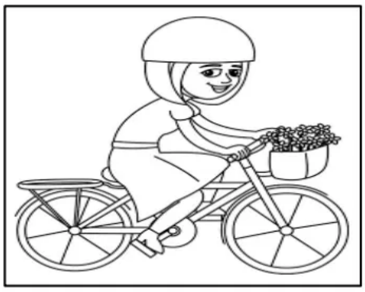

भाई – गेंद

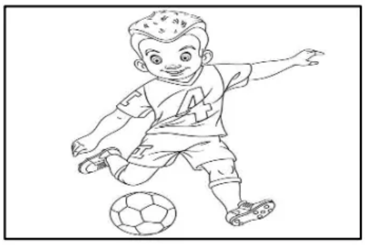

मित्र – नाचना

छाया में – आराम

Question 9 (10 marks)

निम्नलिखित वाक्यांशों से 100 शब्दों का एक निबंध लिखिए :

- मातृ दिवस
- मिलकर उपहार खरीदना
- घर में पूजा करना
- खीर-पूरी पकाना

- शाम को मौसी का आना
- खुशियाली मनाना – माँ प्रसन्न होना

ईमानदार लकड़हारा

हरिया एक ईमानदार लकड़हारा था। वह प्रतिदिन लकड़ी बेचकर केवल पाँच रुपए ही कमाता था।

एक मित्र ने उसे समझाया कि थोड़ा अधिक कमाया करो ताकि बुरे दिनों में अनाज की कमी न हो।

अगले दिन ज़ोरों की बारिश होने लगी। हरिया चिंता में पड़ गया। लकड़ी काटने का भी समय निकला जा रहा था। अनाज न होने के कारण वह भूख से तड़पता रहा।

बारिश रुकने पर वह लकड़ी लेने के लिए निकल पड़ा। लकड़ी काटते समय कमज़ोर हरिया की कुल्हाड़ी फिसलकर नदी में गिर पड़ी। हरिया रोने लगा कि अब उसका गुज़ारा कैसे होगा?

तभी अचानक जल के देवता चाँदी और सोने की कुल्हाड़ी लेकर उसे देने आए। परन्तु ईमानदार हरिया ने लेने से मना कर दिया। देवता हरिया की कुल्हाड़ी लेने वापस पानी में चले गए।

जल- देवता हरिया की ईमानदारी से प्रसन्न हुए। उन्होंने लोहे की कुल्हाड़ी के साथ-साथ उसे सोने और चाँदी की कुल्हाड़ियाँ भी दे दीं। हरिया खुशी-खुशी घर लौटा। सोने और चाँदी की कुल्हाड़ियाँ बेचकर उसे बहुत पैसे मिले। अब वह कभी भूखा नहीं रहेगा।

ईमानदार व्यक्ति जीवन में हमेशा प्रगति करता है।

स्रोत - यूट्यूब

संसार को नचानेवाले कृष्ण कन्हैया घुटनो के बल चलते हुए सबको लुभा रहे हैं :

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहिं पिए।
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिए।

ISSN : 1694-4119

Rimjhim 80 - 2023
Designed & Printed at the Publishing & Printing Department
Mahatma Gandhi Institute, Moka - Mauritius.